चौथा अध्याय

४.० दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों का शिल्प-विधान --

४.१ प्रास्ताविक

४.२ भाषा

४.३ पात्रानुकूलता

४.४ वैचारिकता

४.५ काव्यमयी, अलंकृत भाषा शैली

४.६ मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों से युक्त भाषा शैली

४.७ व्यंग्यात्मक भाषा

४.८ प्रतीकात्मक भाषा

४.९ भाषण शैली

४.१० मुहावरे - कहावतें

४.११ शब्दचयन

४.१२ अंग्रेजी भाषा के शब्द

४.१३ उर्दू शब्दों का प्रयोग

४.१४ चित्रात्मकता (चित्रात्मक शैली)

४.१४.१ रूपचित्र

४.१४.२ दृश्यचित्र

४.१४.३ वस्तुचित्र

४.१५ संवादशैली

४.१६ विश्लेषणात्मक शैली

४.१७ वर्णनात्मक शैली

४.१८ निष्कर्ष ।

चौथा अध्याय

४.० दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों का शिल्प-विधान --

४.१ स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी का उपन्यास - साहित्य शिल्पविधान की दृष्टि से भी सफल है। शिल्प-विधान में भाषा, कहावतें, मुहावरें, अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग अलग-अलग शैलियाँ आदि बातों को परखा जाता है। शिल्प विधान की लगभग सभी विशेषताएँ दुष्यन्तकुमार के उपन्यास साहित्य में उपलब्ध होती हैं।

दुष्यन्तजी ने सरल-अर्थगम्य, सुबोध हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। भाव, विचार और वातावरण निर्मिति के लिये यथास्थान उर्दू और अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है। साथ ही यथास्थान कहावतों मुहावरों का प्रयोग करके भाषा के कलेवर को सजाया है।

उसी प्रकार चित्रात्मक, संवाद, व्यंग्य, वर्णन, विश्लेषण आदि शैलियों के भी दर्शन होते हैं। अब हम उनके उपन्यासों की शिल्प योजना की चर्चा करते हैं --

४.२ भाषा --

साहित्यकार जिस भाषा का प्रयोग करें, वह भाषा प्रचलित, जन जीवन के अनुकूल, बोधगम्य और सही होनी चाहिए। वह इतनी स्पष्ट हो कि अर्थ-बोध बिना किसी प्रयत्न के पाठक के सामने निकल आये। केवल अर्थ ही नहीं लेखक का उद्देश्य भी स्पष्ट हो जाये। साथ ही भाषा में क्लिष्ठ, असामान्य शब्दावली नहीं होनी चाहिए। शब्द भाव के अनुकूल, सन्तुलित होने चाहिए। ये सभी बातें दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों की भाषा में देखने को मिलती हैं।

दुष्यन्तकुमार ने खड़ीबोली के क्लिष्ट साहित्यिक रूप की अपेक्षा उर्दू -

अंग्रेजी के शब्दों से युक्त बोलचाल की सरल,सहज भाषा का प्रयोग किया है । भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिये यथास्थान भाषा अलंकृत भी है, काव्यमयी भी है ,और सरस भी है । स्थानीय बोली के शब्दों से वातावरण निर्माण हो गया है । दुष्यन्त-कुमार कवि रहने से काव्यात्मकता उनकी भाषा का गुण रहा है ।

उनके 'छोटे-छोटे सवाल' , 'आंगन में एक वृक्ष' दोनों उपन्यासों में सनसनाती भाषा का स्वरूप मिलता है । उनकी भाषा सरल,बोधगम्य है,उनमें कहीं भी जटिलता नहीं है । सार्थकता,विषयानुकूलता, समर्पकता आदि भाषा की विशेषताएँ उनमें मिलती हैं ।

'आंगन में एक वृक्ष' उपन्यास में दुष्यन्तकुमार ने सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया है । भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार रहा है । उपन्यास की भाषा प्रसंगानुकूल,और पात्रानुकूल होने पर भाषा का प्रभाव बढता है । उसमें सजीवता आ जाती है । 'छोटे छोटे सवाल','आंगन में एक वृक्ष' दोनों उपन्यासों की भाषा उपर्युक्त शर्तों को पूरा करनेवाली है । दोनों उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप देखिए --

'आंगन में एक वृक्ष' उपन्यास में चंदन के पिताजी ऊर्दू-प्रधान हिन्दी बोलते हैं - जैसे - 'अभी चंदन नाबालिग है । जिसके पास रहेगा,वही सारी जायदाद का मालिक या मुन्तजिम होगा । ... और जानती हो, यह सूझा-बूझा आपके इस खादिम की भी । यह तो सभी को मालूम था कि ससुर साहब मरहूम चंदन से बहुत प्यार करते हैं ।' [१]

मुंशी अतिकुर्रहमान अंसारी ऊर्दू शब्दों से हिन्दी बोलते हैं -- जैसे -- 'अल्लाह का दिया सब कुछ है - पैसा है,नाम है, इज्जत है,शोहरत है ।' [२]

'छोटे छोटे सवाल' उपन्यास भी भाषा की दृष्टि से सशक्त उपन्यास है । इस उपन्यास के कई स्थल स्थानीय बोली भाषा के कारण पाठकों को प्रभावित करते हैं । बिजनौरी भाषा का स्वरूप प्रभावी ढंग से इसमें प्रकट हुआ है । इस उपन्यास से

पात्र लाला हरीचंद ,गनेशीलाल ,छदम्मीलाल आदि की बोली भाषा देखिए --

छदम्मीलाल - " क्या कहदे करे लालाजी, मैं इससे के रया था ।" [3]

लालाजी - " तो मय्यैा, बखत कू क्यूं बरबाद करा जाये ।" [4]

गनेशीलाल - " मैन्ने चूं-चकर करी ? भगवान जान्ने है मेरे साले की चिठ्ठी धरी है मेरी जेब मैं ।" [5]

इस प्रकार की बोली भाषा से स्थानीय परिवेश सामने आ जाता है ।

४.३ पात्रानुकूलता --

पात्रानुकूलता भी दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में देखने को मिलती है । पात्रानुकूल भाषा रहने से पाठकों को इस बात का पता चलता है कि वह बोलनेवाला पात्र शिक्षित या अनपढ है । पात्रानुकूल भाषा के साथ - साथ पात्र के मानसिक स्तर के अनुरूप भाषा हो तो उपन्यास में विश्वास,सजीवता आ जाती है । इसी बात की ओर भी दुष्यन्तजी ने ध्यान दिया है । ` छोटे छोटे सवाल` उपन्यास के पात्र लाला हरीचंद,गनेशीलाल,छदम्मीलाल, मुकदम बाबा आदि पात्र अनपढ है । उनकी भाषा और बाबू हरकरण सहाय की भाषा में अंतर है । पात्रानुकूल भाषा का उदा.देखिए ---

लाला हरीचंद " सखेबरत,तुम समझो कि हमने तुम्हैं लेई लिया । पर मैय्या तुम अभी बच्चे हो । जानते हो सिच्छक का कार्य कित्ती जिम्मेवारी का होवै है ।" [6]

बाबू हरकरण सहाय" अपने हॉस्टल के आप मालिक हैं । जैसा उचित समझें करें । कमेटी उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगी ।" [7]

मास्टर उधमचंद " जाने इसकी कौन सी` एप्रोच ` थी कि एक भी मेम्बर ने ` अपोजीशन` नहीं किया " [8]

इस प्रकार प्रत्येक पात्र की भाषा अपनी विशेषता लिये हुए है ।

शिक्षितों की भाषा में अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं। भाषा पात्रानुकूल रहने से उपन्यास में सजीवता, विश्वास का भाव आ जाता है।

४.४ वैचारिकता --

वैचारिक सम्प्रेषण और भावाभिव्यक्ति भाषा का दायित्व होता है। यह बात भी दुष्यन्तजी की भाषा शैली में विद्यमान है। ' किन्तु मैं शिष्या के नाते उसे आत्मजा मानता हूँ और वह चाहे कैसी भी भावनाएँ रखे, मेरे विचारों में परिवर्तन नहीं हो सकता। जो आत्मजा है, वह कभी भी अर्धांगिनी नहीं हो सकती ' [१] जैसे वाक्य विचार के कारण हमारे मन में बैठ जाते हैं। कम से कम शब्दों में व्यक्ति के चरित्र को संक्षेप में उजागर करने की शक्ति भी दुष्यन्तजी की भाषा में देखने को मिलती है। उपर्युक्त वाक्य सत्यव्रत के चरित्र को भी स्पष्ट करता है।

४.५ काव्यमयी, अलंकृत भाषाशैली --

काव्यमयी, अलंकृत भाषाशैली का प्रयोग लेखक भाषा को संवारने, सजाने, पाठकों को प्रभावित करने के लिये करता है। कभी-कभी लेखक पात्रों के चरित्र को उभारने के लिये, अपने विचारों को अत्याधिक प्रभावशाली बनाने के लिये इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है। दुष्यन्तकुमार कवि होने से उनके उपन्यास साहित्य में काव्यमयी, अलंकृत भाषाशैली के दर्शन होते हैं। उनके उपन्यास ' छोटे-छोटे सवाल ' का एक वाक्यांश देखिये। जिसमें राजपुर कस्बे की संध्या की सुन्दरता काव्यमयी शैली में अभिव्यक्त हुई है। ' आकाश पर कुछ आकृतियाँ उभरती हैं और अबाबीलों की तरह पंख खोलकर धीरे-धीरे धरतीपर उतरने लगती हैं। शहर के चारों ओर खड़े खजुर के मनहूस से पड़े सतर्क प्रहरियों की तरह तन जाते हैं। लखौरी ईंटों के उदास खंडहरोंपर लज्जा की लाली दौड़ जाती है। सोन नदी का जल सुनहरा हो उठता है। और छोटे तालाब के चारों ओर गोलाकार खड़े जामून, नीम, और खजूर

के वृक्ष सामुहीक नृत्य की मुद्रा धारण कर लेते हैं ।'[१०] इस वाक्यांश में संध्या की सौन्दर्यता गिने-चुने प्रभावी शब्दों में साकार हुई है । यहाँ भाषा सरस,स्वाभाविक और प्रभावोत्पादक बन गई है । काव्यमयी भाषा के कारण दुष्यन्तजी के उपन्यासों को पढते समय ऐसा लगता है कि हम उपन्यास नहीं पढ रहे बल्कि कविता का पाठ कर रहे हैं । काव्यात्मकता उनकी भाषा का एक बडा महत्वपूर्ण गुण है । इस प्रकार की भाषा उनके उपन्यासों के कई स्थलोपर देखने मिलती है ।

भाषा को सरस,मनोरंजक बनाने के लिये दुष्यन्तकुमार ने काव्यमयी भाषा का ही नही गाने की पंक्तियाँ, गजल ,शेर-शायरी का भी प्रयोग किया है । उनके उपन्यासों का कोई पात्र शेर,गजल गुनगुना रहा है तो कोई फिल्मी गीत गा रहा है । ' छोटे-छोटे सवाल ' उपन्यास की विमला गीत गुनगुनाती है --

' तोरे नयनों ने,
तोरे नयनों चोरी किया
मेरा छोटा-सा जिया
परदेसिया ।
ओ तेरे नयनों ने ।'[११]

उसी प्रकार राजपुर के हिन्दू स्कूल के छात्र प्रार्थना गाते हैं ।

' वह शक्ति हमें दो दयानिधे
कर्तव्य मार्गपर डट जायें ।'[१२]

सत्यव्रत के हृदय में कविता की एक पंक्ति उभर आती है ।

' तटपर रखकर शंख सिपियाँ
चला गया है ज्वार हमारा ।'[१३]

' आगन में एक वृक्ष ' उपन्यास में छोटे अपने भाई साहब चंदन की पसंदीदा गजलें गाता है --

" कभी अपना वादा वफा कीजिएगा
मेरी जा कहाँ तक दगा दीजिएगा ।"
. . . .
लगता नहीं है जी
मेरा उजडे दयार में ।" [१४]

इस प्रकार दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में काव्यमयता के दर्शन होते हैं। इससे उनकी भाषा की प्रभावात्मकता और भी बढ गयी है।

४.६ मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों से युक्त भाषा शैली --

उपन्यासों में पात्रों की मनस्थिति उनका मानसिक अन्तर्द्वन्द्व आदि के चित्र को प्रस्तुत करनेवाली भावात्मक शैली होती है। ऐसी भाषाशैली पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करने में पूर्णत: समर्थ होती है। 'छोटे छोटे सवाल' उपन्यास में सत्यव्रत की मनस्थिति " जब से विमला ने उसे पढाने के लिये नहीं बुलवाया तभी से अकेलेपन उसके लिये समस्या बन गया है। हर श्याम एक प्रश्नवाचक चिन्ह की तरह उसके सामने आ खडी होती है कि वह उसे कैसे हल करें ? कहाँ जाये ? अक्सर अपने को ईमानदारी से टटोलकर सत्यव्रत ने स्वयं से प्रश्न किया है -- क्या ऐसा विमला से अलगाव के कारण ही होता है ?" [१५]

इस चिन्तन में सत्यव्रत की मनस्थिति प्रकट हुई। यहाँ उसके चरित्र की उदारता, निर्मलता दिखाई देती है। शिष्या विमला के प्रति उसका भी स्पष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार 'आँगन में एक वृक्ष' उपन्यास में मैनाजी की मनस्थिति - " उनके भीतर आशाओं और आशंकाओं का एक गहरा अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था। चंदन जायेगा या नहीं ? कही मना कर दें तो ? नहीं, नहीं, ऐसा नही होगा। वे अपने आपसे लड रहे थे और इसलिए उनके होंठ शुश्क हो गये थे।" [१६] मैनाजी का यह अन्तर्द्वन्द्व उनके चरित्र को उजागर करता है। मैनाजी चंदन को अत्यधिक चाहती थी।

इसी कारण उसके जाने से वह व्यथित होती है। मेनाजी के शब्द से उनको आंतरिक वेदना एवं व्यथा टपक पड़ रही है। उनके होंठ शुष्क हो गये है। इस चिन्तन से नारी का छोटे बच्चों के प्रति लगाव प्रकट होता है।

४.७ व्यंग्यात्मक भाषा --

दुष्यन्तकुमार ने व्यंग्यशैली को भी अपनाया है। उनके दोनों उपन्यासों में व्यंग्यशैली का अधिक मात्रा में प्रयोग नहीं है। जो कुछ व्यंग्य वाक्य मिल जाते हैं, वे अपने लक्ष्यपर प्रहार करने में सफल हुये हैं। ' आंगन में एक वृक्ष ' उपन्यास में चंदन के पिताजी पर मेनाजी भभूत का प्रयोग करती हैं। इसका पता लगनेपर वे कहते हैं " क्योंजी, एक गिलास पानी मिल जायेगा ? ... लेकिन सुनिये, उसमें भभूत मत मिलाईये।" १७

इसी तरह ' छोटे-छोटे सवाल ' उपन्यास में राजपुर के हिन्दू स्कूल के छात्र अधिक मात्रा में फेल हो जाने पर मिलनेवाली सामान्यजनों की प्रतिक्रिया देखिये -- " स्कूल तरक्की कर रहा है, इस साल पिछले साल से चौगुने लड़के फेल हुए हैं।" १८ यहाँ व्यंग्य अपने लक्ष्य पर प्रहार करने में पूर्ण रूप से सफल हुआ है। दुष्यन्तजी के व्यंग्य मर्म को छुनेवाले हैं। इस प्रकार व्यंग्यात्मक शैली से दुष्यन्तजी की भाषा में मार्मिकता आई है।

४.८ प्रतीकात्मक भाषा --

प्रतीकात्मक भाषा दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में बहुत कम स्थलोंपर मिलती है। ' छोटे छोटे सवाल ' उपन्यास में विमला प्रतीकात्मक शब्दों में सत्यव्रत से कहती है " अब यह समुद्र की महानतापर निर्भर है कि वह अपने तक आयी नदी का स्वागत किस तरह करें। पर नदी की गति तो समुद्र ही है। चाहे वह बहाने बनाकर चक्कर खाती हुई समुद्र में मिले या सीधी उसी में जा गिर ...." १९

यहाँ विमला की आत्मसमर्पण की भावना को अभिव्यक्त करने के लिये नदी, समुद्र को प्रतीक बनाया गया है ।

४.९ संवाद भाषण शैली --

दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में भाषण शैली के भी कुछ उदा. मिल जाते हैं । इस शैली में वाक्य छोटे-छोटे, प्रवाहपूर्ण, सरल भाषा में होते हैं, जिससे कि सुननेवालों पर अधिक प्रभाव पड सके ।

राजपुर के हिन्दू स्कूल की मैनेजमेण्ट छात्रों का शोषण करती है । अध्यापक भी इस बात से नाराज रहते हैं । राजपुर के चुनाव में हिन्दू स्कूल के अध्यक्ष लाला हरीचंद एक उम्मीद्वार हैं । इसी चुनाव के मौकेपर एक स्थानपर छात्र रामपूजन कुछ अध्यापकों की मदत से भाषण देता है ।" दुनिया के किसी भी आजाद देश में विद्यार्थियोंपर इतने अंकुश नही लगाये जाते जितने हमपर लगाये जा रहे हैं और इसका सबसे ताजा प्रमाण है हमारें प्रिन्सिपल का वह आदेश जिसके द्वारा उन्होंने हॉस्टल के छात्रों को लाला गनेशीलाला के होटल में खाना खाने के लिये बाध्य किया है ।.... बरदाश्त की भी हद होती है । जब कृषि योजना के बहाने इन्होंने गाव के सीधे साधे लडकों से हल जुतवाकर उनका वक्त और कॉलेज का रिझल्ट खराब किया तब हमने विरोध नहीं किया ।... अगर होटल हमारे हित के लिये खोला गया है तो फिर हम होटल में खाने को तैयार है, मगर हमसे उतने पैसे लिये जाये जितने हमें हॉस्टल में देने पडते हैं ।" २०

यहाँ हृदय के सम्पूर्ण आवेश के साथ रुक-रुक कर अपनी बात का प्रमाण जताने का प्रयत्न किया गया है ।

उपर्युक्त भाषा की विशेषताओं के अलावा कम से कम शब्दों में व्यक्ति के चरित्र को संक्षेप में प्रकट करने की शक्ति दुष्यन्तजी की भाषा में दिखाई देती है । 'आंगन में एक वृक्ष' उपन्यास में चंदन के चरित्र को संक्षेप में प्रकट करनेवाला वाक्य देखिये " बाबू आदमी थोडेई है, फिरस्ते है ।" २१

इस प्रकार छोटे छोटे सवाल उपन्यास में " अब उसकी दुकान के रसगुल्लों की शोहरत उसकी दुश्यरित्रता की कहानियों से भी ज्यादा फैल गयी है।" जैसे वाक्य व्यक्ति के चरित्र को संक्षेप में प्रकट करते हैं।

सांराश यह कि भाषा के प्राय: सभी गुण दुष्यन्तजी के दोनों उपन्यासों की भाषा में देखे जा सकते हैं।

४.१० मुहावरें कहावते --

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार ने भाषा को सजोन - सँवारने के लिये मुहावरों कहावतों का भी प्रयोग किया है। भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने में मुहावरे - कहावते बडी सहायता करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता आ जाती है। लेखक अपने कथन को अधिक स्पष्टता से प्रकट करने के लिये मुहावरों का प्रयोग करता है। छोटे-छोटे सवाल उपन्यास में निम्नलिखित मुहावरों कहावतों का प्रयोग हुआ है। यथा --

" आगे नाथ न पिछे पगटा।" [२३]

" कोऊ नृप होय हमें का हानी,
चेरी छाँडि न हुई है रानी।" [२४]

" बैलों की पूँछ मरोडना"
काम करते - करते टांगे
तराजू हो गयी थी उसकी।" [२५]

" मेरी साँस उखडने लगी" [२६]

उपर्युक्त मुहावरों को पढकर मुहावरों की ओर भाषा का झुकाव स्पष्ट हो जाता है।

४.११ शब्दचयन --

दुष्यन्तकुमार का शब्द चयन बहुत विस्तृत और समृध्द ज्ञान का परिचायक है। उन्होंने व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करने के लिये यथास्थान अपने औपन्यासिक रचनाओं में अंग्रेजी, उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया है।

४.१२ अंग्रेजी भाषा के शब्द --

दुष्यन्तकुमार ने देवनागरी लिपि में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। उन्होंने देवनागरी लिपि में अंग्रेजी शब्दों का पहले प्रयोग करके तत्पश्चात कोष्ठक में हिन्दी अनुवाद दिया है।

'इम्पॉर्टेण्ट (महत्वपूर्ण),' मारल (नैतिक),' एक्सर-साईज(व्यायाम), ' रियलाइज (महसूस),' रेस्पेक्ट (इज्जत),' डिस्कशन (बहस),' ग्राण्ट(अनुदान), ' लेविल (स्तर),' एडमिनिस्ट्रेटिव (प्रशासनिक),' डिसिप्लिन (अनुशासन), पेरेण्टस (माँ-बाप),' प्राब्लम्स (समस्याएँ),' सीरियस (गंभीर), बोल्ड (साहसपूर्ण),' सब्जेक्टस (विषयों),'

४.१३ ऊर्दू शब्दों का प्रयोग-

दुष्यन्तकुमार ने ऊर्दू भाषा के बिना अर्थ दिये अनेक शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे --' छोटे छोटे सवाल' उपन्यास में प्रयुक्त ऊर्दू शब्द -- ' इख्तियार',' गुनाह',' इकलामबाजी',' बेतकल्लूफी',' आरामगाह',' तकोया-कलाम',' मक्सद',' मुनासिब',' तनख्वाह',' ताल्लुकात',' इजाजत'

' आँगन में एक वृक्ष',' उपन्यास में प्रयुक्त उर्दू शब्द -' तौबा अस्तगफार', ' मुकदमा',' मुवकिफ',' मुन्तजिम',' खादिम',' मुकर्रिर',' शुक्रिया',' इल्लिा', ' तवायफ',' मकफूल',' रजामंद', तसलीम'

इस प्रकार दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में प्रयुक्त उर्दू-अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों की भरमार को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे सभी शब्द उनके ज्ञान-

अध्ययन को प्रमाणित करने में समर्थ है। दुष्यन्त ने वातावरण का चित्रण, पात्रों के स्वाभाविक रूप को प्रदर्शित करने के हेतु दो भाषाओं के शब्दों का यथास्थान खुलकर प्रयोग किया है। उनका शब्दचयन उनके ज्ञान अध्ययन का परिचायक है।

४.१४ चित्रात्मकता -

दुष्यन्तकुमार की चित्रात्मक शैली अत्यंत प्रभावपूर्ण, आकर्षक और समर्थ है। उन्होंने इस शैली का प्राय: दो रूपों में प्रयोग किया है। एक शब्द चित्रों द्वारा पात्र में रूप सौन्दर्य को दिखाने के लिये, दूसरे बाह्य दृश्यों और वस्तुओं को सजीव रूप प्रदान करने के लिये।

४.१४.१ रूपचित्र --

पात्रों के रूप एवं सौन्दर्य के रेखाचित्र खींचते समय दुष्यन्तजी ने सरल शब्दावली का प्रयोग किया है। नारी के शारीरिक सौन्दर्य के रेखाचित्र में यथार्थता प्रभावात्मकता के लिये दुष्यन्तजी ने विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया है। उदा. के लिये छोटे-छोटे सवाल में विमला के शारीरिक सौन्दर्य को इन शब्दों में चित्रित किया है -- "इक्कीस बाईस साल की उम्र, भरा हुआ पुष्ट वक्षस्थल, सुडौल गोरी बाहें और छोटी मगर बोलती हुयी आँखें। रंग एकदम गोरा... मुख और किताबों से चिपके वक्षस्थल को ही वह एक नजर देख पाया था।"[२७] यहाँ शब्दों की सजावट से युवती का रूप सौन्दर्य अपने यथार्थ और आकर्षक रूप में सामने आ जाता है। शब्दों को इस ढंग से रखा है कि युवती का रूपचित्र हमारे सामने साकार हो उठता है। लेखक युवती के शारीरिक सौन्दर्याकर्षण पर अधिक बल दे रहा है। इसलिये उसकी बाहे, आँखे, रंग का उल्लेख किया है।

४.१४.२ दृश्यचित्र --

दुष्यन्तकुमार ने छोटे छोटे सवाल उपन्यास में शिक्षा संस्था में चलनेवाला भ्रष्टाचार, विद्यार्थियों का शोषण, साम्प्रदायिकता, धार्मिक क्रिया, आदि बातों पर प्रकाश डाला है। इसी कारण विद्यार्थियों की हडताल, जुलुस -प्रदर्शन, रामलीला,

यज्ञ आदि दृश्य मिलते हैं। राजपुर के हिन्दू स्कूल कमेटी के अध्यक्ष लाला हरीचंद के भ्रष्टाचारी अन्यायी कार्य से विद्यार्थी, अध्यापक असंतुष्ठ रहते हैं । चुनाव के समय विद्यार्थी कुछ अध्यापकों की सहायता से जुलुस निकालते हैं । हड़ताल करते हैं । उसका एक दृश्य देखिये --" हिन्दू कॉलेज के उन चार सौ लड़कों का जुलुस या जो कॉलेज में हड़ताल कराने के बाद शहर में नारे लगाते घूम रहे थे ।... शहर की सारी मुख्य गलियों में नारे लगाने के बाद जुलुस मण्डी चौक में आकर इकट्ठा हो गया था । कण्ठ की पूरी ताकद लगाकर सबने एक नारा लगाया " लालाशाही नहीं चलेगी " और उसकी गूँजपर खिंचते, जमा होते हुए लोगों के साथ जुलुस ने एक सभा की शकल अख्तियार कर ली ।... फिर विद्यार्थियों के पुरजोर महकीले भाषण हुए जिसमें उन्होंने प्रिन्सिपल, प्रेसीडेण्ट, लाला हरीचंद और सेक्रेटरी गनेशीलाल की जमकर बखिया उधेडी ।" [२८]

इसी प्रकार आर्य समाज मंदीर में चले शुरु हुये यज्ञ का दृश्य देखिये -- " स्वामीजी के साथ-साथ सत्यव्रत भी आप से आप मन्त्रोच्चारण करने लगा । मन्त्र की समाप्ति पर स्वाहा के साथ-साथ सत्यव्रत और वह लड़की दोनों यंत्रवत दाये हाथ की मुठ्ठी में भरकर थोडी-थोडी सामग्री हवन कुण्ड की अग्निपर फेकते जाते थे । लोग एकदम भाव विहल होकर यह दृश्य देख रहे थे । धीरे धीरे स्वामीजी ने यज्ञ में हलुवे के उस पूरे थाल की आहुती दे दी । मगर दूसरे ही क्षण फलों और मेवों से भरे दो थाल उनके सामने और आ गये और आहुति का क्रम फिर जारी हो गया । बडे बडे ताजे बम्बइया केले और सन्तरे अग्नि में पडकर छटपटाते हुये झुलसने लगे ।" [२९] यहाँ दुष्यन्त जी ने यज्ञ के समय का दृश्य सरल शब्दों में लिखा है । इसे पढनेपर हमारे सामने यज्ञ का दृश्य झलकने लगता है ।

इसी प्रकार के चित्र ' आँगन में एक वृक्ष ' उपन्यास में भी उपलब्ध है । इसमें दुष्यन्तजी ने जमींदारों की अय्याशी क्रूरता, हेकडी को दिखाया है । चंदन शराब पीकर बेहोश हो जाता है । होश में आनेपर उसके पिताजी उसे बुरी तरह पीटते हैं । तब का दृश्य देखिये --" हरामजादे आज मैं तुझे पिलाऊँगा । साले ने जिन्दगी को शराबखाना बना लिया है । सुअर के बच्चे, बदजात । आज मैं तेरी

खाल खींचकर भूस भर दूँगा ।... ला बे लाठी उठा ।

और इसके बाद सड-सड लाठियों के मारे जाने की ध्वनियाँ और भाई साहब की दर्दभरी आवाजें ` पिताजी अब नहीं पीऊँगा, पिताजी अब माफ कर दीजिये ।`[30] यहाँ इस चित्र में दुष्यन्तजी ने भद्दी गालियों का प्रयोग करके ऐसी यथार्थ परक शब्दावली का प्रयोग किया है कि जिससे पाठक के सामने जमींदारों की क्रूरता एवं हेकडी का चित्र आ जाता है।

४.१४.३ वस्तुचित्र --

वस्तुचित्रों की योजना में उनकी शैली सरल सहज बनी है। किसी इमारत का चित्र प्रस्तुत करने में वर्णन शैली प्रधान हो गयी है।` छोटे-छोटे सवाल ` उपन्यास में राजपुर के हिन्दू स्कूल की इमारत का चित्र इस प्रकार खिंचा है। ` एक मामुली सी पीली दुमंजिली इमारत है जो हर ओर से चौकोर नजर आती है। उसमें अन्दर जाने के लिये एक ही बडा-सा दरवाजा है जिसपर लोहे की मोटी नुकीली कीलें उभरी है और नीचे एक बडी सी साकल और कुन्दा लगा है। भीतर छोटा-सा आँगन है। दरवाजे से आँगन में घुसते ही बायी ओर दफ्तर है ,जहाँ पवन बाबू बैठते है फिर टीचर्स रूम और लायब्रेरी है। और दायी ओर ऊपर जाने का जीना,साईंस लैबोरेटरी तथा प्रिन्सिपल का कमरा है। नीचे के शेष पाँच - सात कमरों में हाईस्कूल की कक्षाएँ लगती है। `[31] इस चित्र में अत्यंत सरल शब्दों में स्कूल की इमारत का चित्र खिंचा है। वाक्य रचना सरल रहते हुये भी उसमें चित्र को साकार करने की क्षमता है। कहीं पर दुष्यन्तजी ने ब्यौरेवार चित्र प्रस्तुत किया है तो कहीं पर दो - चार पंक्तियों में ही चित्र खिंचा है।

उपर्युक्त चित्रात्मक शैली के अलावा कहीं - कहीं पर कवित्वपूर्ण आकर्षक शैली के भी दर्शन होते हैं। ` छोटे छोटे सवाल ` उपन्यास में उपलब्ध संध्या वर्णन में कवित्पूर्ण शैली का उदा.देखिये --` शाम के साये आकाश से उतरकर धरती की ओर बढते है। कॉलेज की पीली इमारत का रंग सुनहरे रंग में झिलमिला उठता है। कॉलेज के पीछे सडक के साथ-साथ शहर तक फैले मैदानों में देसी सदा सुहागिन

की बाढ़ पर फूलों के छोटे - छोटे चिराग जल उठते हैं।'[३२]

'शाम के साये आकाश से उतरकर' 'फूलों के चिराग' जैसी शब्दावली में लेखक की कल्पना और कवित्व का सौन्दर्य व्याप्त है। इस प्रकार विविध चित्रों में शैली का वैविध्यपूर्ण प्रयोग दुष्यन्त की चित्रण शैली के सामर्थ्य और कौशल का द्योतक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि लेखक को सभी प्रकार के चित्रांकन में सफलता मिली है। चित्रात्मकता के सभी गुण दुष्यन्त की चित्रण शैली में व्याप्त है। दुष्यन्तजी ने रूप,दृश्य,वस्तु चित्रण में जो आकर्षक रंग भरे हैं, वह उनके समृध्द ज्ञान, सूक्ष्म दृष्टि और सफल लेखनी की परिचायक है। लेखक ने विषय के अनुसार उनमें प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। दुष्यन्तकुमार कवि होने से उनके कुछ चित्रों में काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं। आकर्षक,उपयुक्त,प्रभावपूर्ण शब्द रचना से उनके चित्र सार्थक बन पड़े हैं।

४.१५ संवादशैली --

दुष्यन्तकुमार ने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में रोचकता,नाटकीयता की वृध्दि के लिये इस शैली का प्रयोग किया है। संवादशैली नाटकों का एक तत्व है परन्तु आधुनिक युग के उपन्यासों में इसका प्रयोग होने लगा है। संवाद शैली से उपन्यासों में नाटकीयता निर्माण होती है। संवादशैली में पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल शब्दावली का व्यवहार होता है। इस शैली को अत्यधिक प्रभावपूर्ण और सजीव बनाने के लिये दुष्यन्त ने पात्रों की शिक्षा,संस्कृति एवं मानसिक धरातल के अनुकूल भाषा का व्यवहार किया है। संवाद के सभी गुण और सजीवता, संक्षिप्तता, रोचकता,सरल शब्दयोजना आदि का ध्यान रखते हुये लेखक ने जिस रूप में पात्रानुकूल बोलचाल की व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है, उस ओर पाठक का ध्यान अनायास आकृष्ठ हो जाता है।

दुष्यन्त ने संवादों की योजना करते समय स्वाभाविकता की रक्षा के

लिये भाषा में पात्रानुकूल परिवर्तन कर दिया है। विभिन्न पात्र - यथा मुसलमान, देहाती, अनपढ , शिक्षित अपनी-अपनी भाषा में बोलते हैं, तो कृति में सौन्दर्य की वृध्दि के साथ-साथ रोचकता और व्यावहारिकता का समावेश हो जाता है। ` छोटे छोटे सवाल ` और ` आंगन में एक वृक्ष ` उपन्यासों में उपलब्ध संवादों के कुछ उदा. इस प्रकार है ---

` मुकद्दम चाचा ने बाजी संभाल ली ` अरी पंजे की साला क्या लूट लिया तेरा ?`

` अरे मेरा क्या लूटेगा जलगया । `

` वही तो । ` मुकद्दम चाचा तेजी से बात काटकर बोले`

` तैन्ने जान्ने किवो का क्या क्या लूटा । वही तो मैं सोच्चूं तुझे कौन लूट सकै । ` [33]

यह अनपढ देहाती मुस्लिम लोगों की बोली भाषा है। जल गया, सोच्चूं शब्द स्थानीय लगते हैं, क्योंकि स्थानीय लोग इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते है। शिक्षित पात्रों के संवादों में अंग्रेजी भाषा के शब्द मिलते है। जैसे --

` मास्टर उमचंद ने पुन: चर्चा पर आते हुए जय प्रकाश से पूछा ।

` कहिए । कैसे लगे नये प्रिंसिपल साहब ?`

` अच्छे है । ` राजेश्वर उत्तर दिया

` इन्स्पेक्टर साहब के रिश्तेदार है इसलिये योग्य तो होंगे ही साथ ही एडमिनिस्ट्रेटिव (प्रशासनिक ) मामलों में भी कुशल होंगे । और स्कूल को ग्राण्ट ( अनुदान ) वगैरह दिलाने में भी सहायक होंगे । ` [34] जयप्रकाश ने सरलता से कहा ।

जैसा पात्र है वैसी ही उसकी भाषा है। शिक्षितों के संवादों में अंग्रेजी शब्द आ गये हैं। इस प्रकार पात्रानुकूल संवाद होने से उपन्यास में सजीवता, विश्वास की भावना आ गई है।

` आंगन में एक वृक्ष ` उपन्यास में संवाद कम मिलते है। चंदन के पिता

चौधरी साहब क्रोध में आकर नौकर रामफल को बुरी तरह से पिटते हैं । उनके कथन में गालियों का पुट और क्रोध की भावना मिलती है । यथा, " सूअर के बच्चे नीच-कमीने । जिस थाली में खाता है, उसी थाली में छेद करता है । आज मैं तेरी बोटी-बोटी नोच लूँगा । तेरी ऐसी की तैसी, कुत्ते की औलाद, तेरी यह मजाल कि तू मेरे लिये फकीरों से भभूत लाये" रामफल अपनी गलती स्वीकार कर रहा था...
" सरकार । मुझे मैनाजी ने हुक्म दिया था । उन्होंने ही रुपये दिये थे । उन्हीं के हुक्म से मैं उस फकीर के पास गया था ।....

" तेरी और फकीर की ऐसी की तैसी... ।"
पिताजी ने दाँत किचकिचाकर कहा था," साले । मैं उन हड्डियों का बना हुआ नहीं हूँ कि इन दुचियल फकीरों की भभूत खाकर मर जाउंगा ।"....
" और बता... ।" पिताजी ने कड़ककर कहा था ।
" बताता हूँ ।"[35] रामफल ने रोते हुये कहा था ।

इस संवाद से जमींदारों की क्रूरता, मारपीठ का रूप सामने आ जाता है । उपर्युक्त संवादों से स्पष्ट होता है कि दुष्यन्तजी ने संवाद विषय, प्रसंग के अनुकूल रचे हैं । उनमें कहीं भी क्लिष्ठ शब्दावली नहीं है । क्रोध की व्यंजना में गालियों का पुट है, तो शिक्षितों के संवादों में अंग्रेजी भाषा का पुट है । मुसलमान पात्रों के संवादों में उनका परिवेश झलकता है । सार यही कि संवाद शैली में विविधता है । संवाद प्रसंग, पात्र विषय के अनुकूल है ।

४.१६ विश्लेषणात्मक शैली --

दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में विश्लेषणात्मक शैली के भी दर्शन होते है । उनके उपन्यासों में यह शैली आलोचनात्मक, आत्मविश्लेषणात्मक रूप में मिलती है । छोटे छोटे सवाल उपन्यास में पूँजीवादी प्रवृत्ति, शिक्षा संस्था में चलनेवाले भ्रष्टाचार के चित्र मिलते हैं । ऐसे प्रसंगपर आलोचनात्मक शैली से काम लिया गया है ।

अध्यक्ष लाला हरीचंद विद्यार्थियों की मदद से अपने मटृपर की ईंटें कॉलेज में रखते हैं। विद्यार्थियों से काम लेकर वे पाचास मजदूरों की मजदूरी बचाते हैं। इस परिश्रम के बदले में वे विद्यार्थियों को कुछ भी नहीं देते। जयप्रकाश, सत्यव्रत, उत्तमचंद, प्रिंसिपल आदि मास्टरों को दूध, मिठाई खिलाकर खुश करते हैं। वास्तव में विद्यार्थियों को दूध, देना चाहिए था। जयप्रकाश उनके इस व्यवहार का विश्लेषण इस प्रकार करता है। " ये जानते है कि न्याय और हक के लिये आवाज उठानेवाले सब लोग नहीं होते - थोड़े से होते है। और उन्हें ये कुछ-न-कुछ खिला-पिलाकर वश में कर लेते है। इसी लिये तो बड़े-बड़े प्रेस, अखबार, सम्पादक और कवि लेखक वगैरा पूँजिपतियों या सरकारों के हाथ बडी-बड़ी कीमतों पर बिके हुए है। हम लोग मामूली आदमी है, इसलिये हमारा मुँह मिठाई खिलाकर ही बंद कर दिया जाता है।"[36] उक्त विश्लेषण में पूँजीवादी प्रवृत्ति की कड़ी आलोचना मिलती है।

मास्टर सत्यव्रत की शिष्या विमला उसकी ओर आकर्षित होती है। सत्यव्रत उसे शिष्या की दृष्टि से देखता है पर विमला उसकी ओर बढ़ती रहती है। कभी-कभी विमला के सामीप्य से सत्यव्रत का मन डाँवाडोल हो जाता है। पर अपने कर्तव्य का ध्यान आते ही सँभल भी जाता है। उसकी मनस्थिति का विश्लेषण देखिये --" वह तो विमला के आचरण को .... और सम्पूर्ण विमला को अपनी ब्रह्मचर्य भावना के लिये एक चुनौती मानकर चलता है। यह सच है कि विमला का सामीप्य उसे भला लगता है। उसका मन डाँवाडोल हो उठता है क्षणों के लिये। किन्तु उसका बाध्य व्यक्तित्व पर्वत की तरह अविचलित, शान्त और स्थिर रहता है। हवा के सुगन्धित और तेज झौंके असफल से मँडराते और टकराते है। वह खुद को जाने कितनी बार समझा चुका है कि अगर हिला तो वह पर्वत क्या धूल भी नहीं रह जायेगा। उसके संस्कार, संयम, शिक्षा दीक्षा सब का अस्तित्व अकारथ हो जायेगा।"[37] एक ओर कर्तव्य, संयम दूसरी ओर जवानी का आकर्षण ऐसे समय मन की जो स्थिति रहती है उसका यहाँ बड़ा प्रभावी स्पष्ट विश्लेषण हुआ है।

४.१७ वर्णनात्मक शैली --

इस प्रकार की शैली का प्रयोग व्यक्ति के रूप, किसी स्थान या वस्तु के स्वरूप को दिखाने के लिये किया जाता है। वर्णन से वह वस्तु हमारे सामने साकार हो जाती है। दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में इस शैली के भी दर्शन होते है। वर्णनात्मक शैली में लेखक किसी वस्तु या स्थान का ब्यौरेवार वर्णन करता है। इसमें लेखक का यह प्रयास रहता है कि उस वस्तु, स्थान का चित्र पाठकों के सामने आ जाये। ' छोटे छोटे सवाल ' उपन्यास में राजपूर कस्बे का वर्णन देखिए --

" राजपुर पच्चीस तीस हजार की आबादी का एक छोटा - सा कस्बा है, जहाँ न कोई थियेटर है, न सिनेमा, न कोई सांस्कृतिक गतिविधि है, न साहित्यिक उत्साह। पुरे शहर में एक ही बडी सडक है (जो बिजनौर से आती है) जिसमें इधर-उधर से रेंगती हुई संकरी-सी कई गलियाँ आ मिलती है। गलियों में दिनभर बच्चे, मकोडे और नाबदान के कीडे बिलबिलाते रहते है और सडक पर गांव से गुड या राब की गाडियाँ लेकर आये हुये किसानोंपर, दलालों और आढतियों की मक्खियों-सी भीड भन्भनाती रहती है।"[38] यहाँ राजपुर कस्बे का रूपचित्र सरल शब्दों में खिंचा है। इस वर्णन में कहीं भी जटिलता या क्लीष्टता नहीं है। यह वर्णन पढनेपर राजपुर कस्बे का चित्र हमारे सामने आ जाता है। यह लेखक की वर्णन शैली की सफलता का द्योतक है।

उसी प्रकार, रामलीला समारोह के समय का दृश्य वर्णन देखिए --

" पण्डाल आदमियों और औरतों से खचाखच भरा था। शामियाने के बांसोंपर आदर्श-वाक्य और गैस की लालटेनें टँगी थी। बच्चों की चिल्लपों और स्त्रियों की अर्थहीन ऊँची आवाजें, शोर का एक निश्चित स्तर बनायें थी। आने-जाने का भीड में कोई रास्ता न था सिवाय उस एक किनारे के, जहाँ आठ-दस कुर्सियाँ और मूढे विद्यार्थियों ने मास्टरों के लिये ला रखे थे।.... पर्दा उठने में देर थी। मंचपर गैस के दो बडे बडे हण्डे जल रहे थे। प्रकाश में पर्देपर बनी आठ गोपियाँ और

उनके बीचोबीच खडे मुरली बजाते हुए कृष्ण नारियों के आकर्षण केन्द्र बने थे।"[39] यहाँ दुष्यन्तकुमार ने रामलीला का दृश्य, पण्डाल, लोग, लालटेने, शोर सभी का इस खुबी से वर्णन किया है कि वह दृश्य हमारे सामने साकार हो जाता है। इसमें लेखक की वर्णन-कुशलता का संकेत मिलता है।

इसी प्रकार 'आगन में एक वृक्ष' उपन्यास में कुछ स्थलोंपर वर्णन शैली के दर्शन हो जाते हैं। चंदन के पिता चौधरी साहब की बहन फूलदेई की शादी में आई बारात का वर्णन देखिए --"रेलवे स्टेशन से गाँवतक बारात की क्लाट बनी थी। आगे अठारह झूलदार हाथी थे। हर हाथीपर चांदी का एक हौदा था और हर हौदे में एक कनस्तर शराब। हाथी भी पिये हुये थे और सवार भी। उनके पीछे सोने-चांदी और जरी की झूल फरफराती हुई चौबीस घोडियाँ थी। एक से एक नायाब - अरबी और कलावंत। उनके पीछे थे सौ रथ, सौ टपटाट तांगे।"[40]

४.१८ निष्कर्ष ---

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों की शिल्पयोजना सफल सिध्द हुयी है। उनके उपन्यासों की भाषाशैली के विविध आयाम उपलब्ध होते हैं। आकार में उनके दोनों उपन्यास लघु है, फिर भी उपन्यास शिल्प की सभी खुबियाँ उनमें मिलती हैं। पात्र और वातावरण के अनुकूल उन्होंने भाषा का प्रयोग किया है। बीच बीच में प्रसंगानुकूल काव्यमयी शैली के भी दर्शन होते हैं, जो उनके सफल कवि होने की ओर संकेत करती है। विषय, प्रसंग के अनुसार व्यंग्य शैली का भी प्रयोग किया है। इस सब के साथ संवादशैली का वैविध्य, चित्रात्मकता, काव्यात्मकता उनकी कलात्मक रुचि को प्रमाणित कर सकने में समर्थ है। विद्यार्थियों की हडताल, चुनाव के समय का वातावरण, रामलीला उत्सव, यज्ञवेदी आदि के चित्र खिंचने में दुष्यन्तकुमार को पर्याप्त सफलता मिली है। उनकी चित्रात्मक शैली में चित्र को साकार करने के सभी गुण विद्यमान है। सार यह कि उनके दोनों उपन्यास शिल्प विधान की दृष्टि से बडे सफल बन पडे हैं।

सन्दर्भ

१	आंगन में एक वृक्ष - ले.दुष्यन्त	पृ.६३
२	-वही-	पृ.२६
३	छोटे छोटे सवाल, ले.दुष्यन्तकुमार	पृ.२५१
४	- वही -	पृ.२४
५	- वही -	पृ.२४
६	- वही -	पृ.३०
७	- वही -	पृ.१४३
८	- वही -	पृ.७५
९	- वही -	पृ.२४६
१०	- वही -	पृ.३२
११	- वही -	पृ.१२४
१२	- वही -	पृ.२१२
१३	- वही -	पृ.२३७
१४	आंगन में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.९२
१५	छोटे छोटे सवाल , ले.दुष्यन्त	पृ.२३८
१६	आंगन में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.७४
१७	- वही -	पृ.७४

१८	छोटे छोटे सवाल - ले.दुष्यन्त	पृ.५०
१९	- वही -	पृ.२४२
२०	- वही -	पृ.२२२
२१	आंगन में एक वृक्ष ले.दुष्यन्त	पृ.८
२२	छोटे छोटे सवाल, ले.दुष्यन्त	पृ.३४
२३	- वही -	पृ.९४
२४	- वही -	पृ.२१०
२५	- वही -	पृ.११७
२६	आंगन में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.१०
२७	छोटे छोटे सवाल, ले.दुष्यन्त	पृ.१७४
२८	- वही -	पृ.२२१
२९	- वही -	पृ.४५
३०	आंगन में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.१६
३१	छोटे छोटे सवाल, दुष्यन्त	पृ.३३
३२	- वही -	पृ.३४
३३	- वही -	पृ.२०३
३४	- वही -	पृ.१५७
३५	आंगन में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.६७

३६	छोटे छोटे सवाल - ले.दुष्यन्त,	पृ.१९१
३७	- वही -	पृ.१६६
३८	- वही -	पृ.३३
३९	- वही -	पृ.१२७
४०	आँग में एक वृक्ष, ले.दुष्यन्त	पृ.४६ ।